International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(4): 170-172

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(4): 170-172
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 29-05-2023
Accepted: 04-07-2023

प्रितीश सरकार
संस्कृत शिक्षक, त्रिमोहिनी पीसीएम स्कूल, दक्षिण दिनाजपुर, पश्चिम बंगाल, भारत

Corresponding Author:
प्रितीश सरकार
संस्कृत शिक्षक, त्रिमोहिनी पीसीएम स्कूल, दक्षिण दिनाजपुर, पश्चिम बंगाल, भारत

वर्तमान समाज में मनुसंहिता की सामाजिक आचरण के प्रभाव: एक समीक्षा

प्रितीश सरकार

सारांश
भारतीय परंपरा के अनुसार श्रवण के बाद स्मृति का स्थान है। वैदिक युग में प्रत्येक विषय एक रिश्ते से दूसरे रिश्ते की शृंखला में जुड़ा हुआ है। धृ+मन अर्थात् धर्म। सरल शब्दों में यह कहा जा सकता है कि धर्म पाशविक प्रवृत्ति पर नियंत्रण करके लोगों को अच्छाई के मार्ग पर ले जाता है। सामाजिक स्थिति को बनाए रखने के लिए सूत्र साहित्य की शाखाएँ धर्म सूत्र बाद में छंदबद्ध छंद में लिखे गए धर्म शास्त्र हैं। धर्मशास्त्र को स्मृति या संहिता कहा जाता है [1] । वेद मनुमतस्य अनुसारं वैवस्वात् मनुः मनुसंहिताग्रन्थस्य रचयिता अस्ति । मनु ब्रह्मा के शरीर से प्रकट हुए। इसी मनु से मानव जाति की उत्पत्ति हुई। इसी मनु से मानव जाति का प्रसार हुआ, इसलिए वे मनुष्य हैं [2] । मनुसंहिता के बारहवें अध्याय में दूसरे धार्मिक अनुष्ठान का संबंध है। मनु संहिता में भारत, विशेषकर हिंदू समाज की शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति पर गहन चर्चा की गई है। अतः कहा जा सकता है – "श्रुतिस्तु बेदो विज्ञानो धर्म शास्त्रांग तु वै स्मृति: "[3]। समाज के विभिन्न नियम एवं नैतिक नियम भली-भांति एकीकृत हो गये हैं। परन्तु हाल के दिनों में हमें वैदिक नियमों की कोई अभिव्यक्ति उपलब्ध नहीं होती। आज का समाज इतना भ्रष्ट हो गया है कि बचपन से लेकर जवानी तक की वर्तमान शिक्षा में बड़ों और सम्माननीय व्यक्तियों के प्रति सम्मान का सिद्धांत खो गया है। आज के समाज में सामाजिक शिष्टाचार, अभिवादन की शिष्टता लुप्त होती जा रही है। आज के समाज में एक-दूसरे से मिलने पर आत्मीय आत्माओं के साथ आदान-प्रदान करने का कौशल नहीं है। प्रणाम, रिश्तेदारों से शिष्टाचार, सम्मान सब अब नियमों की धारा में लुप्त होते जा रहे हैं। जबकि वैदिक युग के मनुसंहिता समाज में प्रचलित अनुकरणीय व्यवहार नियम नियमों और आदर्शों द्वारा निर्देशित थे, वे व्यवहार नियम आज के समाज में मुट्ठी भर लोगों में देखे जा सकते हैं। अधिकांश लोग इन नियमों का पालन नहीं करते, क्योंकि वे लोग उचित शिक्षा के प्रकाश में नहीं आ पाते, वर्तमान समाज अधिकाधिक भ्रष्ट हो गया है। उसके कारण हिंसा, कलह, अराजकता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। वर्तमान युग में सामाजिक मानदंडों का अवमूल्यन हो गया है [4] ।

कुटशब्दः स्मृति, आचारसंहिता, शिष्टाचार, कौशल, वाक्, अवनति, शिक्षा, समाज ।

प्रस्तावना
मनुसंहिता की सामाजिक आचार और वर्तमान सामाजिक संदर्भ
आचार्य मनु मनुसंहिता के दूसरे अध्याय में सभी के कल्याण के लिए विभिन्न अनुष्ठानों और आचार संहिताओं का वर्णन किया गया है, लेकिन उनमें से अधिकांश का आज पालन नहीं किया जाता है।

आचार संहिता की वर्तमान स्थिति पर एक नजर –
वैदिक काल में समाज में सम्माननीय एवं महत्वपूर्ण व्यक्तियों को सम्मान देने की प्रथा थी। धन, आयु, कर्म, बन्धुत्व और विद्या- ये पाँच ही उस काल में सम्मान के कारण थे। सम्मानित लोगों के साथ एक ही बिस्तर पर नहीं सोना चाहिए या एक ही सीट पर नहीं बैठना चाहिए। जब आप किसी गुरु या सम्मानित व्यक्ति को देखें, तो खड़े होकर उनका स्वागत करें [5], जबकि उन्हें नाम से पुकारें, "भोह"[6] एक प्रथागत अभिवादन था। लेकिन, वर्तमान शोध में यह पाया गया है कि वर्तमान छात्र समाज इन पूर्व नियम-कायदों पर ध्यान न देकर इस बात पर अधिक ध्यान देता है कि आचार्यों, गुरुओं या शिक्षकों को कैसे परेशान किया जा सकता है। वर्तमान विद्यार्थी समाज अपने पिता, माता, सम्बन्धियों, गुरू और गुरुजनों के सामने झुकना नहीं चाहता। वैदिक युग का सामाजिक शिष्टाचार यह था कि - जिन लोगों का अभिवादन किया जाता है उन्हें शिष्टाचार के नाते अभिवादन का उत्तर देना चाहिए। अर्थात प्रति+अभिवादन= प्रत्याअभिवादन [7] करना चाहिए। जब कोई झुकता था तो सामाजिक शिष्टाचार यह था कि अभिवादन करने वाले को आशीर्वाद दिया जाए - "हे सौम्या, अमर रहो" कहने का रिवाज बड़े-बुजुर्गों का था।

"आयुष्मान भाव सौम्येति बच्यो बिप्रअभिवादने ।
आकर्षचस्य नमन्हते बच्य: पूरबक्षर: प्लूतः ।। " [8]

हालाँकि हाल के दिनों में इन मुद्दों पर अमल नहीं किया गया है, लेकिन कुछ मामलों में इसकी निरंतरता केवल कुछ शिक्षकों में ही देखी जा सकती है।
एक-दूसरे से मिलते समय शिष्टाचार एक सामाजिक कर्तव्य है। मनु कहते थे कि ब्राह्मण के मामले में कुशल, क्षत्रबंधु [9] या क्षत्रिय के मामले में अनामय, शूद्र के मामले में कुशल के आदान-प्रदान को आरोग्य शब्द से कस दिया गया। वर्तमान समय में नियमों का उस तरह से पालन नहीं किया जाता है, लेकिन बचपन से लेकर बुढ़ापे तक यह नियम आज भी बरकरार है।
यदि कोई व्यक्ति युवा है, यदि वह यज्ञ आदि में अधिक कुशल है। हालाँकि, उस समय उन्हें उनके नाम से बुलाने का कोई नियम नहीं था। उसे भो अथवा भबत शब्द से सम्बोधित किया जाना चाहिए। परस्त्री, महिला रिश्तेदारों को भवति, सुभागे, भगिनी कहकर संबोधित किया जाना चाहिए।

"अबच्यो दीक्षितो नमः यबियान्पी यो भवेत्।
भो भवत् पूर्वकं त्वेनं विवसेत् धारम्भित ।। " [10]

हाल ही में हुए एक सर्वे से पता चला है कि दरिये इलाके में इस समय ज्यादातर लोग १०० प्रतिशत से ज्यादा ईमानदार हैं, २० प्रतिशत लोग महिलाओं या औरतों का सम्मान करते हैं और बाकी लोग महिलाओं का सम्मान नहीं करते हैं । जो लोग क्षेत्र के जानकार होते हैं लेकिन उम्र में बहुत छोटे होते हैं, उन्हें इस समाज में किसी भी तरह से सम्मान नहीं मिलता है, उन्हें ९९ प्रतिशत लोगों से डांट मिलती है। यही कारण है कि समाज धीरे-धीरे पतन के रास्ते पर जा रहा है।
मनु के युग में चाचा, ताऊ, ससुर, पुरोहित और गुरु जैसे रिश्तेदारों को भले ही वे छोटे हों अभिवादन [11] करने के लिए उन्हें खड़े होकर अपना नाम बोलना होगा। पितृसत्तात्मक और मातृसत्तात्मक सम्माननीय पत्नियों के प्रथम दर्शन में साष्टांग प्रणाम का सख्त नियम था। लेकिन, अब तो बड़ों का सजदा सख्त और दूर का हो गया है, मां, बाप भी अपने बेटे-बेटियों को सजदा करवाते हैं नहीं । धन, मित्र, आयु, कर्म और विद्या- ये पाँच सम्मान के स्थान हैं [12]। इन पांचों में से बाद वाले को पहले की तुलना में अधिक सम्मान दिया जाता है। मनु के युग में सारथियों, रोगियों, बोझ ढोने वालों, महिलाओं, राजाओं और शादी के लिए जाने वाले दूल्हों को सम्मानित किया जाता था। लेकिन, वर्तमान में केवल मरीजों को ही इस रास्ते से जाने की अनुमति है और अन्य को इस रास्ते से जाने की अनुमति नहीं है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन समाज अंधकारमय हो जाएगा।

वर्तमान ज्ञान पर विचार

आज के समाज में इस सुधारित ज्ञान को कोई सुनना नहीं चाहता। विद्यार्थी समाज किसी भी अच्छी बात को न सुनने की मानसिकता खो चुका है। ऐसे शिक्षक जो उन्हें पढ़ाना चाहते हैं उन्हें कोई भी पसंद नहीं करता और वे समाज में बुरे बन जाते हैं। बाद में उन ज्ञान देने वाले आचार्य समाज में विरोधाभास दिखने लगा और उन्होंने छात्रों और शिक्षकों के बीच हमेशा संबंध बनाए रखा। परिणाम स्वरूप समाज सुधार के नियमों, सिद्धांतों, सामाजिक भावना, नैतिक आचरण के नियमों के अभाव के कारण समाज दिन-ब-दिन पतन की ओर जा रहा है [13] । आज शिक्षक यदि अच्छा समाज बनाकर विद्यार्थी समाज को समझना चाहते हैं तो उन्हें बुरा शिक्षक माना जा रहा है।

उपसंहार

मनुसंहिता के सामाजिक व्यवहार के नियम गुरु शिष्य परंपरा में निर्धारित होने के कारण अपनी संपूर्ण विविधता में विश्व में वास्तव में दुर्लभ हैं [14]। प्राचीन इतिहासकारों का मानना है कि मनुसंहिता ने अपना वर्तमान स्वरूप दूसरी शताब्दी ई. में प्राप्त किया [15] । मनु स्मृति शास्त्र में

हिंदू समाज के सभी प्रकार के धर्म, नियम, रीति-रिवाज, चारों वर्णों के कर्तव्य, राजधर्म और सामाजिक व्यवहार की चर्चा की गई है। उस समय के सभी १०० प्रतिशत व्यवहारों में से ९८ प्रतिशत का हाल ही में पालन नहीं किया गया है। यदि उन प्रारंभिक दिनों के नियमों और विनियमों का पालन किया गया होता, तो वर्तमान समाज के पतन से बचा जा सकता था। यह सब तभी संभव है जब आचार्य कुल शिष्याओं पर शासन करने के लिए वास्तविक कानून बनाएगा, तब मनु के युग की सामाजिक आचार संहिता और वर्तमान आचार संहिता में सामंजस्य स्थापित हो सकेगा।

सन्दर्भ

1. जॉन डार्सन- ए क्लासिकल डिक्शनरी ऑफ हिंदू माइथोलॉजी, पृष्ठ-301
2. मैक्रोमुयेलर - प्राचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास, पीपी- (134 - 140)
3. बोनोबिहारी घोषाल-संस्कृत निर्देशिका, पृष्ठ-506
4. 4)युधिष्ठिर गोप-संस्कृत साहित्यकार इतिहास, पृष्ठ-295
5. पी. वी. केन- धर्मशास्त्र का इतिहास, खंड। मैं पृष्ठ 149
6. बिष्णुमूर्ति स्मृति- (28.17)
7. पाणिनिर बिधिशास्त्रो, [8.2.83]
8. डॉ. अन्नदा शंकर पहाड़ी-संस्कृत पुस्तक दीपो, पृष्ठ-253-125
9. एम एम विलिम्स - [ए संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी, पृष्ठ- 325]
10. डॉ. अन्नदा शंकर पहाड़ी- संस्कृत पुस्तक दीपो, पृष्ठ-128
11. जी. बुहेलर - पूर्व की पवित्र पुस्तकें, खंड- 14, भाग-II पृष्ठ - 155
12. चौखम्बा सुरोभारती ग्रोन्थोमाला संस्कृत- पृष्ठ- 7.44
13. डॉ. देबकुमार दास, संस्कृत साहित्यकार इतिहास- पृष्ठ- 228
14. बृहस्पति स्मृति, संस्कार कांड- श्लोक- 13
15. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-441